I J R S S I S,Spl Issue (IV), March-2022 : 80-83 e-ISSN 2347 – 8268 & 2347-8209 (P)
A Double-Blind Peer Reviewed Journal OPEN ACCES Original Article
INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCE AND INFORMATION STUDIES
© VMS RESEARCH FOUNDATIONwww.ijrssis.in

मानव अधिकार और हिंदी साहित्य

(अनामिका के काव्य के संदर्भ में)

प्रा. डॉ. छाया शंकर माळी

सहायकप्राध्यापक, कमलाकॉलेज, कोल्हापुर

Corresponding Author :chhayamali99@gmail.com

Communicated :20.02.2022 Revision : 15.03.2022 Accepted :25.03.2022 Published: 01.04.2022

सारांश:

मानव जब जन्म लेता है तो जन्म से ही उसे अनेक अधिकार प्राप्त होते हैं, जैसे – विचार अभिव्यक्ति, निर्णय स्वतंत्र, शिक्षा, नौकरी (चुनिदां कार्यक्षेत्र) । इन अधिकारों के रहते वह अपना जीवनक्रम व्यतीत करता है । समाज, परिवार के साथ रहते अनेक निर्बंधों को भी वह अपनी मर्यादा या अनुशासन मानकर उसका पालन करते हुए सम्मान से जीवन यापन करता है । प्रकृति के दो वर्ग हैं– स्त्री और पुरुष । पुरुषसत्ताक व्यवस्था और इसी कशमकश में वह अपना हक अधिकार पाने की कोशिश में अपने अस्तित्व निर्माण के पक्ष में पुरुष जाति से समानता तथा बराबरी का दर्जा प्राप्त करना चाहती है । अनामिका का काव्यसाहित्य इसी बात की ओर संकेत करते हुए अपनी कविताओं के माध्यम से नारी का मानव होने का अधिकार जागरूक करती हुई मानवीय संवेदना के प्रति स्त्री से संचेत करना चाहती है, जो समाजहीत, राष्ट्रहीत में है और पुरुष वर्चस्व से विद्रोह न करते हुए समानता की पक्षधर बनकर नारी जीवन की तमाम बारीकियों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करती है ।

बीजसंज्ञा: संविधान, मानवअधिकार, अनामिका, मानवीयसंवेदना, कायदेकानून, प्रशासन, हक, भारतीयलोकशाही,विज्ञापन ।

प्रस्तावना:

प्रकृति की सुंदर रचना है मानव । मानव-वन्यप्राणी मात्र से अलग है क्योंकि प्रतिभा के रूप मे प्रकृति का सुंदर वरदान प्राप्त हुआ है उसके आधार पर उसने आदिमानव से लेकर आधुनिक युग तक अपना विकास किया है| विकास उसके बुद्धि का प्रतीक हैं सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर मानव विकासीत हुआ और अपने अनेक हक और अधिकारों की आवश्यकता महसूस करता है जिसके आधार पर अपने जीवन को सुचारू रूप से बीता सके मानव अधिकार समाज मे ऐसाअधिकार निर्माण करते है, जिसमे सभी व्यक्ति एकता, समानता, बंधुता के साथ निडर होकर जीवन व्यतीत कर सके| मानव अधिकार मानवीय व्यक्तित्व आकार देते है।

मानव अधिकार की अवधारणा :

मानव अधिकार की अवधारणा स्पष्ट करते हुए अनिस भसीस लिखते है, "मानव अधिकार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से विदित होता है कि इस विषय के आधारभूत तत्व मनुष्य के प्राचीनतम साहित्य एवं धार्मिक पुस्तकों में उपलब्ध है । रामायण महाभारत, वेद, कुराण बायबल सिख, बौद्ध व जैन ग्रंथो में मानव अधिकार कि भावना चिरंतन रूप मे विद्यमान है । "[1] अत:मानव अधिकार कि संकल्पना प्राचीन है। तथा इसका क्षेत्र व्यापक है। इसका क्षेत्र व्यापक है । मानव जीवन में इसका अनन्यसाधारण महत्व है । इस बात कि पुष्टि करते हुए थामस बजेंथाल कहते है, " अधिकार जिसकी मानव जाती अति प्राचीन काल से हकदार है और हकदार बनी रहेगी जब तक मानवता रही है । "[2] अत: मानवता धर्म तथा

मौलिक कर्तव्य को निभाने के लिये अधिकार आवश्यक है । 10 दिसंबर 1948 ई को संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने सर्वसंमती से पारित किये मानव अधिकार घोषणापत्र में अधिकारों और कर्तव्यों के अनुच्छेद समाविष्ट है । शिक्षा, संस्कृति, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, समानता, राष्ट्रीयता, बंधुता, विचार अभिव्यक्ति, स्वतंत्रता आदि आधिकारों का समावेश है । मानव अधिकार एवं कर्तव्य को एक दूसरे के पूरक है। व्यक्ति अधिकार के अभाव में अपने कर्तव्य को निभा नहीं सकता। स्वतंत्रता, समता, एकता ये अधिकार कर्तव्य के साधन बन जाते है। परिणामत: समाज मे मानवतधर्म राष्ट्रीय एकात्मता को बढ़ावा देता है। प्राप्त अधिकारों का पालन हमे नैतिकता के डायरे में रहकर कर करना चाहिये । तभी हम अपने अधिकारों को मानव जीवन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि समज सकते है।

अनामिका के कविता मे निरूपित मानव अधिकार :-

समकालीन परिदृश्य में बेहद चर्चित कवि-कथाकार आलोचक और स्त्री – विमर्श की प्रबल पक्षधर अनामिका हिंदी साहित्य में उल्लेखनीय नाम है। अनामिका साहित्य स्त्री केंद्र में रखकर लिखा गया है । मानवीय संवेदना, हक अधिकार, मानवधिकार, सम्मान अस्तित्व की पहचान कर रही स्त्री उनके साहित्य में मुखर हुई है । आदमी अपने अधिकार के लिए हमेशा लढता है। कोई भी काम वह अपने अधिकार के बिना पूरा नहीं कर सकता । स्त्री अपने अधिकार के लिए सदियों से लड़ती आ रही है। घर समाज, परिवार या उसका कार्यक्षेत्र कहीं भी वह पूरी अधिकारिणी नहीं रहती । पुरुष सत्ताक समाज में उसका स्थान दोयम दर्जे का ही रहा। अपनी पूरी उसके अधिकार में है परंतु पुरुष सत्ता समाज में हमेशा उसके अस्तित्व का हनन दुआ है । डॉ। चंदन कुमारी कहती हैं,"स्त्री के मानवधिकारों की रक्षा हेतु संविधान द्वारा नियम बनाए गए है। इनके संचालन एवं कार्यान्वयन की ज़िम्मेदारी समाज, पुलिस और प्रशासन पर है। इन नियमों के संचालन का प्रारूप प्रत्यक्ष है । बहुत बार नियमों की जानकारी के अभाव में इंसान छला जाता है तो कई बार सब जाननेवाला भी केवल भुगतता है , उगा सा खामोश रह जाता है, एक समर्थ अपराधी के समक्ष ।"[3] इससे स्पष्ट होता है कि स्त्री भी अपने सभी अधिकारों के रखते हुए भी समाज व परिवार मे पीड़ित और प्रताड़ित है।

अनामिका की अनेक कविताओं का स्वर मानवअधिकारों को प्रस्फुटित करता है । स्त्रियां, बेजगह, फ़र्निचर, वृध्दाएँ धरती का नमक है जैसी कविता स्त्री के अधिकार की बात स्पष्ट करती है । अनेक ऐसी कविताएँ लिखी हैं जो नारी संवेदना गहराई अंतर्द्वन्द, अकेलापन, संत्रास, पीड़ा, अपने अधिकार के लिए जदुंदो जहद करती नारी की अनेक पहलु लेखिका ने पाठकों के सामने खोले है , उन्हे वाणी ही है।

अनामिका ने अपनी कविताओं के माध्यम से स्त्री के अनेक प्रश्नो से मुखरित किया है । स्त्री – विमर्श के विविध पहलुओं को उजागर किया है। नारी के विविध रूपों को रोखांकित करते हुए परंपरागत मौन को तोड़कर नारी आधुनिकता का चोला पहनकर अपने अस्तित्व की पहचान करने दहलीज लांघ रही है, और इसी कारण स्त्री विमर्श के या कहे कि नारी अपने मानवीय अधिकार से रु-ब-रु होने जा रही, बल्कि हो रही है । अनामिका कि नारी पुरुष सत्ता के विरोध में नहीं बल्कि समानता के पक्ष में खड़ी है। समानता, बराबरी चाहनेवाली स्त्री पुरुषसत्ता परंपरा का विरोध करती जरूर है परंतु विद्रोह नहीं चाहती, लढती नहीं चाहती तो वह मानवीय संवेदना जागरूक करती हुई यह स्पष्ट करना चाहती है कि स्त्री भी एक मानव है, न कि वस्तु उसे भी बोलने चलने का, स्वतंत्रता का हक है न कि सिर्फ कोलू के बैल की तरह काम करने का। समाज में स्थान परिवार में मान, तथा पति और बेटों के नजरों में सम्मान चाहती है। उसका यह हक्क है अधिकार है क्योंकि प्रकृति ने दोनों को समान रुप से जना है

तो एक दूसरे को एक साथ चलना चाहिए न कि एक का शोषण होता रहे दूसरा उसपर अपनी शान समझकर मुस्कराता रहें । इसी बात को अनामिका बेजगह कविता में कुछ इस तरह कहती कि –

"अपनी जगह से गिरकर
कहीं के नहीं रहते

केश, औरतें और नाखन ।"[4]

अनामिका बेजगह कविता में कितनी मार्मिक परंतु यथार्थ रूप स्त्री का रेखांकित करती है कितना बड़ा सवाल पुरुषसत्ता मे नारी के सम्मुख उपस्थित किया है कि हमारा घर आखिर कहाँ है, कौनसी जगह है हमारी ना मैका न ससुराल और न ही समाज में कोई स्थान।

कवयित्रि आगे कहती हैं–" जिनका कोई घर नहीं होता –

उनकी होती है भला कौन सी जगह ?

जो छूट जाने पर, औरत होती है

कटे हुए नाखून
कंघी में फँसकर बाहर आए केशों सी

एकदम से बुहार दी जाने वाली ?"[5]

सच ही कहा है, जिनका कोई घर नहीं होता उनका घर कौनसा होता है, कभी अपने कहे जाने वाले घरों हों बेजगह ही होती है । कंघी से फँसे वालों की तरह । अनामिका के कविता के संदर्भ मे सच ही कहा है, "सिर्फ कविता में ही नहीं, बल्कि अपने संपूर्ण लेका में नारी दृष्टि की एक उदार सांस्कृतिक प्रवक्ता बनाकर उभारी है । उनका स्वर नयी सहस्त्राब्दी का स्वर है जिसकी स्थिर हलचलों में कुलबुलाते कोमल सवाल अपनी तमाम फ़ीज़रतों के साथ स्थापित विमर्शों को अस्थिर करते चले जाते है । "[6]

मौन तोड़ती स्त्री :

अनामिका जी विद्रेह नहीं करती बल्कि अपना मौन तोडती है । तमाम स्त्री जाति की बात रखती है । अपने समय के समाज के परंपराओं के प्रति आवाज उठकर स्त्री समानता का पक्ष अपनाकर परिवार समाज तथा कार्यक्षेत्र में अपने आपको आर – पार रखने कि कोशिश मे है । अनामिका कि स्त्री कविताओं में अपनी दादी का जम्पर पहनकर अपनी चुप्पी तोड़ती है । -

"चुप्पी का अपना सौंदर्यशास्त्र,

नीतिशास्त्र दुआ करता है – यहीं सोच

एक रोज दादी का जम्पर पहना मैं ने
लाज शरम का चुप्पी पर डाल दिया
झिलमिल आकाशी गहना मैंने । "[7]

स्त्री मुक्ति बात करते है तो हर और बंधनों से मुक्त होकर अपना स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है । सदियों से चले आ रहे बंधनों से मुक्ति जाना चाहती है मंजु रुस्तगी कहती है, "स्त्री मुक्ति की जब हमे बात करते है तो औरत की मानसिक जड़ताओं से मुक्ति की बात होती है – इन बंधनों से, उन बेड़ियों से मुक्ति जो औरतों को सदियों से अन्या सेकण्ड सेक्स या अंतिम उपनिवेश की स्थिति में रखे हुए है । यह मुक्ति सभी संदर्भों में वांछनीय है – सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषिक – मानसिक मुक्ति का यह संघर्ष हो उसे दोयम दर्जे में से समानता के दर्जे की पंक्ति में ला खड़ा करेगा । "[8]

अस्तित्व के प्रति सजग :-

व्यवस्था से दलित समाज की आधी आबादी का आक्रोश तथा अग्रह भरा स्वरा भी अनामिका की कविताओं में सुनायी देता है । इन पंक्तियों नारी हम भी इंसान है यह बात समझाने का प्रयास कर रही । अपनी अस्मिता व संबंध का विवेक परिलक्षित कर रही है-

" हम भी इनसान है

हमे भी कायदे से पढ़ों एक –एक अक्षर

जैसे पढ़ा होगा बी।ए। के बाद
नौकरी का पहला विज्ञापन ।"[9]

कवियत्री आगे कहती हैं, हम स्त्रियाँ अपने मन की बात किसे कहे किसको अपना उत्तराधिकारी कहे । पिता बेटी की शादी करके गंगा स्नान करता है अब उनके लिए बेटी मेहमान बनी । पति के घर जब चली जाती है तो बहु का दर्जा प्राप्त होता है । वहाँ की परंपरा नीति नियम में ढलने की कोशिश में अपने

को भूल जाती है । फिर पति के बच्चे जने जाते है । वहाँ भी नाम पति का होता है । माँ तो बनी पर नाम की ।
इसको स्पष्ट करते हुए अनामिका बेजगह कविता में बड़ी ही स्पष्टता से कहती है –

"लड़कियाँ – हवा, धूप, मिट्टी होती हैं

उनका कोई घर नहीं होता। "[10]

अंत : इस बात में कोई दोराय नहीं कि आज भी नारी अपने आधिकार के लिए लढ रही है । समाज और साहित्य का इसलिए तो गहरा संबंध है कि व्यक्ति अपना अधिकार जन्म से प्राप्त करता है । परिवार, समाज, कायदे – कानून इन सभी बातों से वह अपने अधिकार जान लेता है । परंतु समाज का एक वर्ग जिसे पुरुषसत्ताक कहा जाता है वह स्त्रीवर्ग को हमेशा अपने अधिकार वश मे रखना चाहता है । परंतु आज की स्थिति परिवर्तित हुई है। सब अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करना चाहता है । प्रकृति ने सभी के साथ न्याय किया है तो हम समाज के लोग अपने किस अधिकार वर्चस्व की भूमिका अदा कर रहे है ? यह भी सवाल उपस्थित हो जाता है ।

अनामिका का साहित्य सामाजिक न्याय, समानता, बराबर हक्क तथा मानवीय संवेदना चाहता है । न कि विद्रोह । प्रत्येक मनुष्य को अपने हक और आधिकार में जीने का प्रावधान हमारे भारतीय लोकशाही ने दिया है ।

संदर्भ :

भसीसअनिश,'जानिएमानवअधिकारोंको,' (नईदिल्ली,
प्रभातप्रकाशन, असफअलीरोड,सं .2011) पृ.13

डॉ.शर्माकृष्णकुमार, मानवअधिकारसंरक्षणअधिनियम, '
(नईदिल्ली, अर्जुनप्रकाशन, दरियागंज, स 2012)
पृ.13

अनामिकासमकालीनस्त्रीविमर्श, डॉ.चंदनकुमारी,
विद्याप्रकाशनकानपुर, प्र.सं.- 2019, पृष्ठ -34

अनामिका, बेजगह, खुरदुरीहथेलिया (काव्यसंग्रह), पृष्ठ -15
उरिवत

डॉ.मंजुरुस्तगी, अनामिकाकाकाव्य, पृष्ठ -72 (सेउध्दृत)

डॉ.मंजुरुस्तगी, अनामिकाकाकाव्य, पृष्ठ -73 (सेउध्दृत)

डॉ.मंजुरुस्तगी, अनामिकाकाकाव्य, पृष्ठ -73

अनामिका, खुरदुरीहथेलियाँ (काव्यसंग्रह) पृष्ठ -13

अनामिका, बेजगहखुरदरीहथेलियाँ, (काव्यसंग्रह)पृष्ठ -15